❍ 22 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *लेन देन का कनेक्शन सिर्फ एक बाप से रखा ?*

➢➢ *चारों और की हलचल के समय अशरीरी बनने का अभ्यास किया ?*

➢➢ *अलबेलेपन के लूज़ स्क्रू को टाइट किया ?*

➢➢ *परमातम ज्ञान आयर शक्तियों से भरपूर अनुभव किया ?*

────────────────────────

⋆˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
❂ *तपस्वी जीवन* ❂
⋆˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ एकाग्रता अर्थात् सदा एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे निरन्तर एकरस स्थिति में स्थित होने का विशेष अभ्यास करो। उसके लिए *एक तो व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तन करो। दूसरा माया के आने वाले अनेक प्रकार के विघ्नों को ईश्वरीय लग्न के आधार से सहज समाप्त करते, कदम को आगे बढ़ाते चलो।*

⋆˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बुद्धि द्वारा ज्ञान सागर के कण्ठे पर रहने वाली अखूट खजाने की मालिक आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा बुद्धि द्वारा ज्ञान सागर के कण्ठे पर रहने वाले अर्थात् सागर के द्वारा मिले हुए अखुट खजाने के मालिक अपने को समझते हो? *सागर जैसे सम्पन्न है, अखुट है, अखण्ड है, ऐसे ही आत्मायें भी मास्टर, अखण्ड, अखुट खजानों के मालिक हैं। जो खजाने मिले हैं उसको महादानी बन औरों के प्रति कार्य में लगाते रहो।* जो भी सम्बन्ध में आने वाली भक्त वा साधारण आत्मायें हैं उनके प्रति सदा यही लगन रहे कि भक्तों को भक्ति का फल मिल जाए, बिचारे भटक रहे हैं, भटकना देखकर तरस आता है ना!

〰✧ जितना रहमदिल बनेंगे उतना भटकती हुई आत्माओंको सहज रास्ता बतायेंगे। सन्देश देते चलो - यह नहीं सोचो कि कोई निकलता ही नहीं है। *आप महादानी बनो, सन्देश देते रहो, उल्हना न रह जाए। अविनाशी ज्ञान का कभी विनाश नहीं होता। आज सुनेंगे, एक मास बाद सोचेंगे और सोचकर समीप आ जायेंगे।* इसलिए कभी भी दिलशिकस्त नहीं बनना। जो करता है उसका बनता है। और जिसकी करते हो वह भी आज नहीं तो कल मानेंगे जरूर।

〰✧ *तो अखुट सेवा अथक बनकर करते रहो। कभी भी थकना नहीं क्योंकि बापदादा के पास सबका जमा हो ही जाता है और जो करते हो उसका प्रत्यक्षफल खुशी भी मिल जाती है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *निरंतर हर कर्म करते हुए, लौकिक-अलौकिक कार्य करते हुए स्वराज्य अधिकारी का नशा कितना समय और किस परसेन्टेज में रहता है?* क्योंकि कई बच्चे अपने स्वराज्य के स्मृति को संकल्प रूप में याद करते हैं - मैं आत्मा अधिकारी हूँ, एक है संकल्प में सोचना। बार-बार स्मृति को रिफ्रेश करना - मैं हूँ।

〰✧ दूसरा है - *अधिकार के स्वरूप में स्वयं को अनुभव करना और इन कर्मेन्द्रियों रूपी कर्मचारी तथा मन-बुद्धि-संस्कार रूपी सहयोगी साथियों पर राज्य करना, अधिकार से चलाना।* जैसे आप सभी बच्चे अनुभवी हो कि हर समय बापदादा श्रीमत पर चला रहा है और आप सभी श्रीमत प्रमाण चल रहे हो।

〰✧ चलाने वाला चला रहा है, चलने वाले चल रहे हो। ऐसे, *हे स्वराज्य अधिकारी आत्मायें, क्या आपके स्वराज्य में आपकी कर्मेन्द्रियाँ अर्थात कर्मचारी आपके मन-बुद्धि-संस्कार सहयोगी साथी सभी आपके ऑर्डर में चल रहे हैं?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *संगम पर पहले-पहले क्या बदली करते हैं? पहला पाठ क्या पढ़ाते हैं? भाई-भाई की दृष्टि से देखो। भाई-भाई की दृष्टि अर्थात पहले दृष्टि को बदलने से सब बातें बदल जाती है। इसलिए गायन है कि दृष्टि से सृष्टि बनती है।* जब आत्मा को देखते हैं तब यह सृष्टि पुरानी देखने में आती है। *पुरुषार्थ भी मुख्य इस चीज का ही है - दृष्टि बदलने का।* जब यह दृष्टि बदल जाती है तो स्थिति और परिस्थिति भी बदल जाती है। दृष्टि बदलने से गुण और कर्म आपेही बदल जाते हैं। *यह आत्मिक दृष्टि नैचुरल हो जाये।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)

(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- किसी से भी कुछ मांगना नहीं क्योंकि दाता के बच्चे हो"*

➳ _ ➳ मै आत्मा तपस्या धाम में बेठी हुई... अपने मीठे बाबा से असीम वरदानों को ले रही हूँ... और अपने सुंदर सजीले भाग्य को निहारते हुए सोच रही हूँ... *आज बाबा के हाथो में फूल बनकर खिल गयी हूँ... हर दिल को खुशबु से सुवासित कर, ईश्वरीय दौलत से भर रही हूँ..*. कभी देह भान ने, मुझे आत्मा को कितना संकीर्ण और तंगदिल बना दिया था... आज भगवान से मिलकर, सागर सा दिल लिए घूम रही हूँ... और सदा खुशियो की टोकरी हाथो में लिए... *हर दिल पर दिलेरी से खुशियां बाँट रही हूँ.*.. मीठे बाबा ने मुझे किस कदर दरिया दिल बनाकर मेरा यूँ कायाकल्प किया है... रोम रोम से मीठे बाबा को धन्यवाद कर मै आत्मा... प्यारे बाबा के प्यार में खो जाती हूँ...

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को विश्व कल्याणकारी की भावना से भरते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... कितने महान भाग्यशाली हो कि पूरे विष की नजरो में हो... तो सदा स्वयं में शक्तियो का स्टॉक भरपूर करो... और दाता के बच्चे बनकर सर्व को सहयोग दो... *सदा शुभ भावना और समर्थ संकल्पों से भरपूर रहकर, सबके दिलो को सच्ची खुशियो से भर दो.*.. गुणो और शक्तियो से सम्पन्न बनकर सच्चे सेवाधारी बनो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के असीम प्यार को पाकर खुशियो में नाचते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... आपने मुझ आत्मा का भाग्य कितना सुंदर बना दिया है... *सबके लिए प्रेम शुभ भावना सिखाकर, मुझे कितना सुखदायीं बना दिया है.*.. मै आत्मा हर आत्मा में विशेषता के मोती देखने वाली आपके प्यार में होलिहंस बनकर मुस्करा रही हूँ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को ईश्वरीय प्राप्तियों का नशा दिलाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *खुशियो के और प्राप्तियों के झूले में सदा झूलने वाले, खुशनसीब हो... इस नशे सदा डूबे रहो..*.निष्काम सेवाधारी बनकर निरन्तर ईश्वरीय पथ पर बढे चलो... सच्चे सेवा भावना से ओतप्रोत होकर,

प्राप्तियों का प्रत्क्षय फल खाने वाले... खुशियो में सदा खिलते रहो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा प्यारे बाबा की अमूल्य शिक्षाओ को पाकर, गुणो और शक्तियो से सजकर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... *आपकी फूलो सी गोंद में आकर,मुझ आत्मा का जीवन, गुणो की सुगन्ध से भर गया है.*..मै आत्मा अपने सत्य स्वरूप में स्थित होकर... विश्व कल्याण की भावना दिल में लिए... सारे विश्व को आत्मिक मूल्यों से सजा रही हूँ..."

❇ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को मेरे महान भाग्य का नशा दिलाते हुए कहते है :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... ईश्वर पिता से मिली सर्व प्राप्तियों के नशे में रहकर... सदा सन्तुष्टमणि आत्मा बनो... सदा स्वयं को और वायुमण्डल को सेफ रखने वाले... सच्चे सेवाधारी बनकर... ईश्वर पिता के दिलतख्त पर मुस्कराओ... *सदा निमित्त और निर्माण बनकर, डबल कमाई से मालामाल बनो.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की ईश्वरीय दौलत से अमीर बनते हुए कहती हूँ :-* "प्यारे बाबा मै आत्मा देह के भान में कितनी तंगदिल थी... और *आज आपने आज अपनी बाँहों में लेकर... मुझे कितने विशाल ह्रदय से सजा दिया है.*..मै आत्मा सबके जीवन को खुशियो की बहारो से सजा रही हूँ... ईश्वरीय गुणो को पूरे विश्व पर छलका रही हूँ..."मीठे बाबा से मीठी रुह रिहान कर... मै आत्मा कर्मक्षेत्र पर लौट आयी...

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- कोई भी डिस सर्विस का काम नही करना है*"

➳ _ ➳ एक खुले स्थान पर, ठन्डी हवाओ का आनन्द लेती अपने खुदा दोस्त को अपने साथ अनुभव करती मैं अपने खुदा दोस्त का शुक्रिया अदा करती हूँ जिन्होंने अपनी श्रेष्ठ मत दवारा मेरे जीवन को सर्वश्रेष्ठ बना दिया। *अपने

ऐसे खुदा दोस्त, भगवान बाप को मैं प्रोमिस करती हूँ कि उनकी निंदा कराने वाला कोई भी कर्म मैं कभी भी नही करूँगी*। हर कदम उनकी श्रेष्ठ मत पर चलते हुए, उनके हर फरमान का पालन करते अपने श्रेष्ठ संकल्प, बोल और कर्म द्वारा उनका नाम बाला करूँगी।

➳ _ ➳ मन ही मन अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा करती अपने प्यारे मीठे बाबा की मीठी मधुर पालना के झूले में स्वयं को झूलते हुए अनुभव करती *मैं महसूस करती हूँ जैसे मेरी इस प्रतिज्ञा को पूरा करने में बाबा मेरे सहयोगी बन, मुझ में अपनी शक्तियाँ प्रवाहित कर, मुझे आप समान बलशाली बनाने के लिए अपने पास बुला रहें हैं*। परमधाम से अपने शिव पिता की सर्वशक्तियों की मीठी फ़ुहारों को अपने ऊपर गिरते हुए मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ। *ये रंग बिरंगी मीठी फुहारे मेरे अन्तर्मन को छू कर मुझे देह से न्यारी एक अति प्यारी अवस्था का अनुभव करवा रही हैं*।

➳ _ ➳ इस न्यारी और प्यारी अवस्था मे मैं स्वयं को मस्तक के बीचों - बीच चमकते हुए एक अति सूक्ष्म गोल्डन स्टार के रूप में देख रही हूँ जिसकी रंग बिरंगी किरणों का प्रकाश चारों और फैलकर मन को बहुत ही सुखद अनुभूति करवा रहा है। *इस प्रकाश में मुझ आत्मा के सातों गुणों और अष्ट शक्तियों का मिश्रण समाया है जो मुझे मेरे सातों गुणों और अष्ट शक्तियों का अनुभव करवा कर बहुत ही शक्तिशाली स्थिति में स्थित कर रहा है*। स्वयं में से निकल रहे इस खूबसूरत प्रकाश को देखते और गहन आनन्द की अनुभूति करते - करते मैं गोल्डन स्टार अपनी रंग बिरंगी किरणो को फैलाता हुआ अब चमकते चैतन्य सितारों की उस गोल्डन दुनिया मे जा रहा हूँ जहाँ मेरे प्यारे पिता रहते हैं।

➳ _ ➳ अपने पिता के प्रेम की लग्न में मग्न, मैं जगमग करती ज्योति धीरे - धीरे ऊपर उड़ते हुए आकाश को पार करती हूँ और उससे ऊपर फरिश्तो की दुनिया को पार कर, अनन्त ज्योति के देश, अपने परमधाम घर मे प्रवेश कर जाती हूँ। *सामने महाज्योति मेरे शिव पिता अपनी सर्वशक्तियों की अनन्त किरणो को फैलाये ऐसे लग रहे है जैसे अपनी सर्वशक्तियों की किरणों रूपी बाहों में मझे भरने के लिए व्याकल हो रहें हैं*। बिना कोई विलम्ब किये मैं चमकती

हुई चैतन्य ज्योति अपने महाज्योति शिव पिता के पास पहुँचती हूँ और उनकी सर्वशक्तियों की किरणों रूपी बाहों में समा जाती हूँ।

➳ _ ➳ मेरे प्यारे पिता की सर्वशक्तियों की किरणें स्नेह की मीठी फ़ुहारों के रूप में मुझ पर बरसने लगती हैं। *सर्वशक्तिवान मेरे प्यारे मीठे बाबा अपना असीम स्नेह मुझ पर बरसाते हुए अपनी सर्वशक्तियों से मुझे बलशाली बनाने के लिए अपनी लाइट माइट को फुल फोर्स के साथ मुझ में प्रवाहित करने लगते हैं*। अपने प्यारे पिता की लाइट माइट पाकर, सर्व शक्ति सम्पन्न स्वरूप बनकर, अपने संकल्प, बोल और कर्म को श्रेष्ठ बना कर, अपने प्यारे पिता का नाम बाला करने के लिए अब मैं साकार सृष्टि पर लौट आती हूँ।

➳ _ ➳ अपने साकार तन का आधार लेकर, ब्राह्मण स्वरूप में स्थित होकर, इस सृष्टि रूपी कर्मभूमि पर अब मैं हर कर्म अपने प्यारे बाबा की याद में रहकर कर रही हूँ। *अपने हर संकल्प, बोल और कर्म पर पूरा अटेंशन देते हुए मैं इस बात का विशेष ध्यान रखती हूँ कि देह भान में आकर, मेरे मन मे कोई भी गलत संकल्प भी कभी उतपन्न ना हो, मेरे मुख से कभी भी, कोई भी ऐसा बोल ना निकले जो किसी को आहत करे या ऐसा कोई भी कर्म मुझ से ना हो जाये जो किसी को तकलीफ पहुँचे और मेरे प्यारे पिता की निंदा का कारण बनें*। इसलिये इन सभी बातों पर पूरा अटेंशन दे, अपने हर संकल्प, बोल और कर्म को श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाने का पुरुषार्थ अब मैं निरन्तर कर रही हूँ।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं चारो ओर की हलचल के समय अव्यक्त स्थिति की अभ्यासी आत्मा हूँ।*
✺ *मैं अशरीरी बनने की अभ्यासी आत्मा हूँ।*
✺ *मैं विजयी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने

का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा पुरुषार्थ को तीव्र करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा अलबेलेपन के लूज़ स्क्रू को टाइट करती हूँ ।*
✺ *मैं तीव्र पुरुषार्थी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ 1. रूहानियत नयनों से प्रत्यक्ष होती है... रूहानियत की शक्ति वाली आत्मा सदा नयनों से औरों को भी रूहानी शक्ति देती है... रूहानी मुस्कान औरों को भी खुशी की अनुभूति कराती है... उनकी चलन, चेहरा फरिश्तों के समान डबल लाइट दिखाई देता है... ऐसी *रूहानियत का आधार है पवित्रता... जितनी-जितनी मन-वाणी-कर्म में पवित्रता होगी उतना ही रूहानियत दिखाई देगी...* पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है... पवित्रता ब्राह्मण जीवन की मर्यादा है... तो बापदादा हर बच्चे की पवित्रता के आधार पर रूहानियत को देख रहे हैं... *रूहानी आत्मा इस लोक में रहते हुए भी अलौकिक फरिश्ता दिखाई देगी...*

➳ ➳ 2. रूहानी संकल्प अपने में भी शक्ति भरने वाले हैं और दसरों को

भी शक्ति देते हैं... जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो रूहानी संकल्प मनसा सेवा के निमित्त बनते हैं... रूहानी बोल स्वयं को और दूसरे को सुख का अनुभव कराते हैं... शान्ति का अनुभव कराते हैं... *एक रूहानी बोल अन्य आत्माओं के जीवन में आगे बढ़ने का आधार बन जाता है...* रूहानी बोल बोलने वाला वरदानी आत्मा बन जाता है... *रूहानी कर्म सहज स्वयं को भी कर्मयोगी स्थिति का अनुभव कराते हैं और दूसरों को भी कर्मयोगी बनाने के सैम्पुल बन जाते हैं...* जो भी उनके सम्पर्क में आते हैं वह सहजयोगी, कर्मयोगी जीवन का अनुभवी बन जाते हैं...

✺ *ड्रिल :- "ब्राह्मण जीवन में रूहानियत का अनुभव करना और कराना"*

➳ _ ➳ अपने सर्वोच्च ब्राह्मण जीवन के बारे में विचार करते ही मुझे मेरे ब्राह्मण जीवन के कर्तव्यों का बोध होने लगता हैं... *अपने ब्राह्मण जीवन को रूहानियत से भरपूर कर, औरों को रूहानियत का अनुभव करवा कर, उनके जीवन को भी रूहानियत से भरपूर करना ही मेरे ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है...* अपने इसी लक्ष्य को पाने के लिए, स्वयं में पवित्रता का बल जमा करने के लिए अब मैं अपने परम पवित्र सत्य स्वरूप में स्थित होती हूँ और पवित्रता के सागर अपने शिव पिता परमात्मा की याद में अपने मन बुद्धि को एकाग्र करती हूँ...

➳ _ ➳ मैं परमपवित्र आत्मा इस देह रूपी मन्दिर में स्वयं को देख रही हूँ... भृकुटि सिहांसन पर विराजमान "मैं पवित्रता का देवता" एक चमकते हुए सितारे के रूप में विराजमान हूँ... *पवित्रता के सागर अपने शिव पिता परमात्मा की याद में मग्न, मैं स्वयं को उनकी छत्रछाया के नीचे अनुभव कर रही हूँ...* उनसे निकल रही पवित्रता की श्वेत धारा निरन्तर मुझ आत्मा के ऊपर बरस रही है और मुझे अपनी और खींच रही है... रेशम की डोर की भांति पवित्रता की इस श्वेत धारा से बंधी मैं आत्मा ऊपर उड़ रही हूँ... नीले आकाश से परे, श्वेत चांदनी के प्रकाश से प्रकाशित दिव्य अलौकिक लोक को पार कर मैं पहुंच गई पवित्रता के सागर, पतित पावन परम पिता परमात्मा के पावन लोक परमधाम में...

➳ _ ➳ पवित्रता के सागर अपने शिव पिता परमात्मा के सम्मुख अब मैं स्वयं को देख रही हूँ... अपनी पवित्र किरणों की फुहारों से वो मुझ आत्मा के ऊपर चढ़ी विकारों की मैल को धोकर मुझे शुद्ध, पवित्र बना रहे हैं... पवित्रता की शक्तिशाली किरणों से मैं स्वयं को भरपूर अनुभव कर रही हूँ... *पवित्रता का शक्तिशाली औरा मेरे चारों और निर्मित हो गया है... पवित्रता के इस शक्तिशाली औरे के साथ अब मैं परमधाम से वापिस नीचे आ रही हूँ...* अपने साकारी ब्राह्मण तन में अब मैं विराजमान हूँ... मेरा पवित्रता का औरा रूहानी शक्ति में परिवर्तित हो रहा है...

➳ _ ➳ रूहानी शक्ति से भरपूर आत्मा बन अपने नयनो से अब मैं सबको रूहानी दृष्टि दे रही हूँ... मेरी रूहानी मुस्कान सभी को खुशी का अनुभव करवा रही है... *पवित्रता का श्रृंगार कर, डबल लाइट फ़रिशता बन मैं औरों को भी लाइट माइट स्थिति का अनुभव करवा रही हूँ...* रूहानी संकल्पो से स्वयं में शक्ति भर कर मैं निर्बल आत्माओं को शक्ति सम्पन्न बना रही हूँ... मेरे रूहानी बोल सभी को सुख और शांति की अनुभूति करवा रहे हैं... *अपने रूहानी कर्मो द्वारा मैं अनेको आत्माओं के सामने सैम्पुल बन, कर्मयोगी स्थिति का अनुभव करवा कर उन्हें भी कर्मयोगी बना रही हूँ...*

➳ _ ➳ इस वर्ल्ड ड्रामा में मैं हाईएस्ट और होलीएस्ट हीरो एक्टर हूँ... सारे संसार की निगाहें मेरी ओर हैं... सभी मुझे संकल्प, बोल व कर्म में फॉलो कर रहे हैं... *विश्व रंगमंच पर अपना हीरो पार्ट बजाते हुए मैं सबको पवित्र रूहानी वायब्रेशन दे रही हूँ...* मेरे पवित्र स्वरूप को देख सभी पवित्र बनने की प्रेरणा ले रहे हैं... मेरी शक्तिशाली रूहानी मनसा वृति से अपवित्र वातावरण स्वत: ही पवित्र वातावरण में परिवर्तित हो रहा है... *जैसे पानी का फव्वारा अपने आस - पास की हर चीज को भिगो देता है ऐसे ही मुझ आत्मा से निकलने वाले रूहानी वायब्रेशन सबको रूहानियत के शीतल जल से भिगो कर उनमें भी रूहानियत की शक्ति भर रहें हैं...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔